अब्दुल बारी मेमोरियल कॉलेज, जमशेदपुर
इंटरमीडिएट, द्वितीय वर्ष (वाणिज्य एवं कला)
विषय - 'हिन्दी कोर' (गद्य भाग)
पाठ का नाम - शिरीष के फूल
लेखक का नाम - हजारी प्रसाद द्विवेदी

(वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर)

प्रश्न:- 'शिरीष के फूल' रचना के रचनाकार कौन है?
उत्तर - हजारी प्रसाद द्विवेदी।

प्रश्न:- हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म कब हुआ था?
उत्तर - सन् 1907 ई० को।

प्रश्न:- हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म कहाँ हुआ था?
उत्तर - उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में।

प्रश्न:- हजारी प्रसाद द्विवेदी को किस पुस्तक पर साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ?
उत्तर - 'आलोक पर्व'

प्रश्न:- हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध संग्रहों के नाम लिखें?
उत्तर - अशोक के फूल, कल्पलता, कुटज आदि।

प्रश्न:- हजारी प्रसाद द्विवेदी के प्रमुख उपन्यासों के नाम लिखें?
उत्तर - बाणभट्ट की आत्मकथा, चारुचन्द्रलेख, पुनर्नवा आदि।

प्रश्न:- हजारी प्रसाद द्विवेदी का निधन कब हुआ?
उत्तर - सन् 1979 ई० को।

(लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर)

प्रश्न:- "शिरीष" के पुष्प को "शीतपुष्प" भी कहा जाता है। ज्येष्ठ माह की प्रचंड गरमी में फूलने वाले फूल को "शीतपुष्प" की संज्ञा किस आधार पर दी गई होगी?

उत्तर:- लेखक ने शिरीष के पुष्प को "शीतपुष्प" कहा है। ज्येष्ठ माह में भयंकर गरमी होती है, उसके बावजूद शिरीष के पुष्प खिले रहते हैं। गरमी की मार झेलकर भी ये पुष्प ठंडे बने रहते हैं। गरमी के मौसम में खिले ये पुष्प दर्शक को ठंडक का अहसास कराते हैं। ये गरमी में भी शीतलता प्रदान करते हैं। इस विशेषता के कारण ही इसे "शीतपुष्प की संज्ञा दी गई होगी।

प्रश्न:- कमल और कठोर दोनों भाव किस प्रकार गाँधी जी के व्यक्तित्व की विशेषता बन गए?

उत्तर- गाँधी जी सत्य, अहिंसा, प्रेम आदि कोमल भावों से युक्त थे। वे दूसरे के कष्टों से द्रवित हो जाते थे। वे अंग्रेजों के प्रति भी कठोर न थे। दूसरी तरफ वे अनुशासन व नियमों के मामले में कठोर थे। वे अपने अधिकारों के लिए डटकर संघर्ष करते थे तथा किसी भी दबाव के आगे झुकते नहीं थे। ब्रिटिश साम्राज्य को उन्होंने अपनी दृढ़ता से दबाया था। इस तरह गांधी के व्यक्तित्व की विशेषता - कोमल व कठोर भाव बन गए थे।

प्रश्न: शिरीष की ऐसी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए जिनके कारण आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उसे 'कालजयी अवधूत' कहा है।

उत्तर- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने शिरीष को 'कालजयी अवधूत' कहा है। उन्होंने उसकी निम्न लिखित विशेषताएँ बताई हैं—

(i) वह सन्यासी की तरह कठोर मौसम में जिंदा रहता है।
(ii) वह भीषण गरमी में भी फूलों से लदा रहता है तथा अपनी सरसता बनाए रखता है।
(iii) वह कठिन परिस्थितियों में भी धुलने नहीं देकता।
(iv) वह सन्यासी की तरह स्थिति में मस्त रहता है।

प्रश्न: लेखक ने शिरीष के माध्यम से किस द्वंद्व को व्यक्त किया है?

उत्तर- लेखक ने शिरीष के पुराने फूलों की अधिकार-लिप्सु खड़खड़ाहट और नए पत्ते - फलों द्वारा उन्हें धकियाकर बाहर निकालने में साहित्य, समाज व राजनीति में पुरानी बनपी पीढ़ी के द्वंद्व को बताया है। वह स्पष्ट रूप से पुरानी पीढ़ी व हम सब में नवीन के स्वागत का साहस देखना चाहता है।

प्रश्न:- कालिदास - कृत शकुंतला के सौंदर्य - वर्णन को महत्व देकर लेखक 'सौंदर्य' को स्त्री के एक मूल्य के रूप में स्थापित करता प्रतीत होता है। क्या यह सत्य है? यदि हाँ तो क्या ऐसा करना उचित है?

उत्तर - लेखक ने शकुंतला के सौंदर्य का वर्णन करके उसे एक स्त्री के लिए आवश्यक तत्व स्वीकार किया है। प्रकृति ने स्त्री को कोमल भावनाओं से युक्त बनाया है। स्त्री को उसके सौंदर्य से ही अधिक जाना गया है, न कि शक्ति से। यह तथ्य आज भी उतना ही सत्य है। स्त्रियों का अलंकारों व वस्त्रों के प्रति आकर्षण भी यह सिद्ध करता है। यह उचित भी है क्योंकि स्त्री प्रकृति की सुकोमल रचना है। अतः उसके साथ छेड़छाड़ करना अनुचित है।

प्रश्न:- 'ऐसे दुमदारों से तो लँडूरे भले' - इसका भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - लेखक कहता है कि दुमदार अर्थात सजीला पक्षी कुछ दिनों के लिए सुंदर दृश्य करता है फिर दुम गँवाकर कुरूप हो जाता है। यहाँ लेखक मोर के बारे में कह रहा है। वह बताता है कि सौंदर्य मोहक नहीं होना चाहिए। इससे अच्छा तो पूँछ कटा पक्षी ही ठीक है। उसे कुरूप होने की दुर्गति तो नहीं झेलनी पड़ेगी।